International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 15-09-2025, Accepted: 14-10-2025, Published: 30-10-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 51-54

हरियाणा के ऋतु गीत: एक सांस्कृतिक अध्ययन

गीता देवी[1], डॉ. सीमा भाटिया[2]
[1] शोधार्थी, हिन्दी विभाग, गुरु काशी विश्वविद्यालय, तलवंडी साबो बठिंडा, पंजाब, भारत
[2] शोध निर्देशक, हिन्दी विभाग, गुरु काशी विश्वविद्यालय, तलवंडी साबो बठिंडा, पंजाब, भारत

सारांश
हरियाणा की लोक संस्कृति अपनी विशिष्टता और जीवंतता के लिए जानी जाती है। इस संस्कृति का सबसे प्रामाणिक और सजीव रूप लोकगीतों में परिलक्षित होता है। हरियाणा के लोकगीतों में ऋतु गीतों का विशेष स्थान है, क्योंकि ये प्राकृतिक परिवर्तनों, कृषि जीवन ,धार्मिक आस्थाओं और सामाजिक भावनाओं को अभिव्यक्त करते हैं। ग्रामीण संस्कृति में ऋतुओं से संबंधित लोकगीत प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। ऋतु गीतों में हरियाणा की कृषि संस्कृति, ग्रामीण जीवन, नारी की भूमिका ,धार्मिक विश्वास और सामूहिकता की भावना परिलक्षित होती है। आधुनिकता और तकनीकी विकास के दौर में यद्यपि इन गीतों की परंपरा धीरे–धीरे क्षीण हो रही है, फिर भी यह हरियाणा की सांस्कृतिक धरोहर के रूप में अमूल्य महत्व रखते हैं। इस प्रकार ऋतु गीत हरियाणा के समाज की प्रकृति, प्रेमी प्रवृत्ति, सामूहिकता, श्रमशीलता और सांस्कृतिक एकता को उजागर करते हैं, इनका संरक्षण और संवर्धन ने केवल सांस्कृतिक दृष्टि से बल्कि अकादमिक अध्ययन की दृष्टि से भी अत्यंत आवश्यक है।

मूल शब्द: लोक परंपरा, सांस्कृतिक धरोहर, सौभाग्यवती सामूहिकता, महोत्सव, ग्रामीण संस्कृति

प्रस्तावना
भारत की संस्कृति परंपरा लोक साहित्य और लोकगीतों में सबसे अधिक जीवंत रूप से अभिव्यक्त होती है। हरियाणा जो उत्तर भारत का हृदय स्थल है,अपनी अपनी कृषि प्रधान जीवन शैली, लोक रीति रिवाज और उत्सवों के लिए जाना जाता है। यहां की संस्कृति में लोकगीतों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह लोकगीत केवल मनोरंजन के साधन नहीं है ,बल्कि सामाजिक जीवन, धार्मिक भावनाओं, प्रकृति से जुड़ाव और सामुदायिक एकता के प्रतीक हैं हरियाणा के लोकगीतों की विविधता में एक विशेष स्थान ऋतु गीतों का है, जो प्राकृतिक परिवर्तनों के साथ–साथ ग्रामीण जीवन की लय और भावनाओं को व्यक्त करते हैं। ऋतु गीतों के माध्यम से हरियाणवी समाज में ऋतुओं के आवागमन, कृषि कार्यों की गति, धार्मिक अनुष्ठानों भाव चावल से भरी भाव चा वी से और सामाजिक उत्सवों को कलात्मक रूप दिया है। ऋतुओं के अनुरूप गीतों की रचना व गान परंपरा यहां की लोक संस्कृति को और समृद्ध करते है।

हरियाणा की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और ऋतु गीतों की परंपरा
हरियाणा की संस्कृति कृषि और ग्रामीण जीवन पर आधारित है। यहां की लोक परंपरा में प्रकृति के साथ गहरा संबंध है। ऋतुओं का परिवर्तन सीधे–सीधे किसानों की आजीविका, फसलों, पशुओं और सामाजिक जीवन पर प्रभाव डालता है। यही कारण है कि लोकगीतों में ऋतुओं की छांव स्पष्ट दिखाई देती है। ऋतु गीतों का उद्भव मानव सभ्यता की प्रारंभिक अवस्था से माना जा सकता है। जब मनुष्य प्रकृति पर पूर्णतया आश्रित था ,तब उसने ऋतुओं को जीवन का आधार समझा फसल बोने, काटने ,पशुपालन और प्राकृतिक घटनाओं ने भी गीतों के माध्यम से अभिव्यक्ति पाई। ऋतु गीत ने केवल मौसम के बदलाव को दर्शाते हैं बल्कि वे किसानों के जीवन के संघर्ष ,उनकी आशाओं और उल्लास को भी अभिव्यक्त करते हैं। उदाहरण के लिए बसंत ऋतु में खेतों में सरसों के फूल खिलने के साथ ही उल्लास और उमंग का वातावरण बन जाता है, जो कि हरियाणा के लोकगीतों के माध्यम से प्रकट करते हैं। इसी प्रकार वर्षा ऋतु के आगमन पर किसान खेतों में हल चलाते हुए और महिलाएं व लड़कियां झूला झूलते हुए ऋतु गीत गाती हैं ,जो उनके हृदय की आंतरिक भावनाओं के उद्गार होते हैं

हरियाणा प्रदेश में ऋतु से संबंधित गीतों की परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से चली आ रही है। यहां के लोकगीतों में मानवीय हृदय की भावनाएं चाहे वह सुख या खुशी के पल हो या दुख की अनुभूति हो, सभी का वर्णन रहता है, क्योंकि हमारे जीवन का ऐसा कोई भी पहलू नहीं है, जिनका वर्णन लोकगीतों के माध्यम से न किया गया हो, तो ऋतुओं के लोकगीत भी हरियाणा प्रदेश की संस्कृति में प्रचलित है। महिलाएं खेत खलियानों में काम करते समय, घर के आंगन में बैठकर , या पर्व त्योहारों के अवसर पर सामूहिक रूप से गीत गाती थी और समय के साथ–साथ यही लोकगीत हमारी सांस्कृतिक धरोहर बन गए। समय के साथ इनके स्वरूप में परिवर्तन हुआ है, किंतु आज भी ये गीत हरियाणवी समाज के जीवन का अभिन्न हिस्सा है। वैसे तो हरियाणा प्रदेश में सभी ऋतुओं से संबंधित लोकगीत गाए जाते हैं ,परंतु इनमें से फागुन के गीत ,सावन के गीत, कार्तिक के महीनों में गाए जाने वाले लोकगीत अपना विशिष्ट महत्व रखते हैं।

फागुन के गीत
हरियाणा की ग्रामीण संस्कृति में फागुन की ऋतु आनंद और उत्सव की ऋतु मानी जाती है। खेतों में सरसों की सुनहरी चमक और गेहूं की लहराती बालियां किसानों के हृदय में प्रसन्नता का संचार करती हैं। फागुन की ऋतु केवल प्राकृतिक मौसम की खुशी ही नहीं बल्कि सामाजिक मेल –जोल, पारिवारिक संबंधों और सामूहिक उत्सवों का भी अवसर है। हरियाणा की लोक संस्कृति में फागुन की ऋतु से संबंधित बहुत सारे लोकगीत प्रचलित हैं " ऐसी सुहावने मास में गृह कार्य से निवृत होकर रात को सजती हैं, महिलाओं की नाच गान महफिल, गांव की अल्हड़ बालाएं, मस्त किशोरियां, भाव – चाव से भरी नवोढाए, अधेड़ उम्र की गृहणियां और सत्तर दिवाली चाट चुकी वृद्धाएं मस्ती से भरकर नाचने गाने लगती हैं। यौवन में उपजी एक किशोरी काम विह्वल होकर लोकगीत के व्याज से अपने सासरे में यह संदेश भिजवाना चाहती है कि उसे बिना किसी पारंपरिक औपचारिकता के ले जाएं।"[1]

"काच्ची इमली गदराई सामण मह
बुढ़िया लुगाई मस्ताई फागण मह
कहिए री उस सुसरे मेरे ने
बिन घाली ही ले जया फागण मह
कहियो री उस बहू म्हारी ने
चार बरस ओर डट जा पीहर म्हं
कहियो री उस जेठ मेरे न

1. हरियाणा संस्कृति एवं कला, पृष्ठ संख्या, 98

बिन घाली ही लेजा फाग्गण म्हं
कहियो री उस बहू म्हारी ने
चार बरस डट जा पीहर म्हं
कहियो री उस देवर मेरे न
बिन घाली ले जा फाग्गण म्हं
कहियो री उस भावज म्हारी ने
चार बरस डट जा पीहर म्हं ,"[1]

फागुन की ऋतु को श्रृंगारी ऋतु भी माना जाता है। ऐसी धारणा है कि" हरियाणा के फागुन के लोकगीत संयोग–वियोग के ताने–बाने से बुने है। फागुन का उन्मत्त मास विरहोत्कंठिता नायिकाओं तथा सुहागिनों की दृष्टि में अपनी पृथक–पृथक आभा लेकर उतरा है। सौभाग्यवती स्त्रियों के प्रति फागुन एक आनंदोभोग का संदेश लेकर आता है। ऐसे शोभनीय काल में ही सौभाग्य की सफलता है। इस समूह गीत में राग–रंग की सर्वतोमुखी झांकी तो देखिए और बच के रहिएगा कि कभी ये रंगीन पानी आपके मन को राग रंजित न कर दे:–

फाग्गन के दिन च्यार री सजनी, फाग्गण के दिन च्यार री सजनी ।
मध जोबन आया फाग्गण म्हं, फाग्गण आया जोबन म्हं।
झाल उठै सै मेरे मन म्हं जिनका बार न पार री सजनी ।
फाग्गन———————————————————— ।
प्यार का चंदन महकन लाग्या,गात का जोबन लचकन लाग्या।
मस्ताना मन बहकन लाग्या, प्यार करण न त्यार री सजनी।
फाग्गन ————————————————।
गाओ गीत मस्ती में भरके,जी जाओ सारी मर मर के।
नाचण लागो छम छम करके, उठण दो झंकार री सजनी ।
फाग्गन ————————————————।

1. हरियाणा के लोकगीत पृष्ठ संख्या 28

चंदा पौह्चा आण्यं सिखर में, हिरणी जा पौह्ची अम्बर में।
सूनी सेज पड़ी सै घर में, साजन करे तकरार री सजनी।
फाग्गन ————————————————————।[1]

उपरोक्त गीत में मे दिखाया गया है, कि फागुन की ऋतु में यौवन अवस्था में मन में हलचल पैदा होती है। प्यार की खुशबू हर तरफ फैल जाती है और शरीर में फुर्ती पैदा हो जाती है। फागुन की ऋतु में इतनी मस्ती भरी होती है कि ऐसा प्रतीत होता है कि विरह की मार से मरी हुई देह भी जीवित हो जाए और ऐसे मौसम में प्रियतम का घर पर न होना बहुत ही दुखदाई प्रतीत होता है।

फागुन की ऋतु में जब एक नव विवाहिता का पति परदेश में गया हुआ है, तो वह फागण की ऋतु को उपालंभ देती हुई रहती है कि जब उसका पति ही घर पर नहीं है तो यह मस्ताना फाग्गण क्यों आया है, पति की अनुपस्थिति में उसे फागण का मौसम अच्छा नहीं लगता। इन्हीं मनोभावों का वर्णन निम्न लोकगीत में किया गया है:–

ज्यब साजन परदेस गए ,
मस्ताना फागण क्यों आया ।
ज्यब सारा फागण बीत गया ,
ते घर में सजना क्यों आया।
छम छम नाचे सब नर–नारी,
मैं क्यों बैठी दुखां की मारी ।
मेरे मन में जब मचा अंधेर ,
तै चांद का चंदन क्यों आया ।
ज्यब पिया आया जी खिल ना,
ज्यब जी आया पी मिल्या ना ।
साजन बिन जोबन क्यूं आया ,

1. हरियाणा लोक साहित्य सांस्कृतिक संदर्भ, पृष्ठ संख्या 45

जोबन बिन सजना क्यूं आया।
मन की तै अरथी बन्धी पड़ी,
आंख्या म्हं लागी हाय झड़ी ।
जब फल मेरे मन का सूक्यां,
लजमारया फागण क्यों आया। [1]

सावन के गीत

हरियाणा की संस्कृति में सावन का महीना विशेष महत्व रखता है। वर्षा ऋतु का यह समय हरियाली, उमंग, उत्साह, नवजीवन और स्त्री सामूहिकता का प्रतीक माना जाता है। सावन का महीना ऋतु परिवर्तन का द्योतक ही नहीं, बल्कि यह ग्रामीण जीवन के लोगों की भावनाओं, लोकगीतों और परंपराओं का उत्सव भी है।

सावन के महीने में नव विवाहिताएं नए–नए गहने बनवाती हैं तथा हरे रंग के कपड़े व हरी चूड़ियां पहनती हैं, क्योंकि सावन के महीने में हर तरफ हरियाली छा जाती है, नव विवाहित व कुंवारी लड़कियां हाथों पैरों पर मेहंदी लगाती है ,क्योंकि मेहंदी को सौभाग्य और श्रृंगार का प्रतीक माना जाता है ।

सावन का आगमन ही वर्षा ऋतु के साथ होता है ,जब गर्मी में तपी हुई धरती को ठंडक मिलती है। खेतों में हरियाली छा जाती ,है और बारिश के कारण फसलों में नई जान आ जाती है। वर्षा ऋतु में घरों पर तरह–तरह के पकवान बनाए जाते हैं, निम्न लोकगीत में सावन के महीने में नव विवाहिताएं चांदी की तगड़ी घडवाने (बनवाने) व नए–नए कपड़े लाने का जिक्र किया गया है

1. स्वयं संकलित

साम्मण का मस्त महीना हे मन्नै तेरी सौ,
कोरी –कोरी चांदी की तागड़ी घड़ाई हे मन्नै ,
उसमें जडाया नगीना हे मन्नै तेरी सौ,
साम्मण का मस्त महीना हे मन्नै तेरी सौ।
चुन्दड ओढ़ मैं तो पानी न गई थी ,
रिमझिम मेघा बरसे हे मन्नै तेरी सौ,
जब मेरा चुन्दड भीजण लाग्या ,
सखिया ने छतरी तानी हे मन्नै तेरी सौ,
सावन का मस्त महीना हे मन्नै तेरी सौ।
कुर्ता पहन मैं तो पानी न गई थी ,
रिमझिम मेघा बरसे हे मन्नै तेरी सौ,
सावन का मस्त महीना हे मन्नै तेरी सौ ।
दामन पहन मैं तो पानी न गई थी ,
जब मेरा दामन भिजण लागया ,
सखियां न छतरी ताणी हे मन्नै तेरी सौ ,
सावन का मस्त महीना हे मन्नै तेरी सौ । [1]

हरियाणा की संस्कृति में सावन के महीने में झूला झूलने की परंपरा का बहुत रिवाज है। साखियां और युवतियां मिलकर सामूहिक रूप से झूला झूलते हुए गीत गाते हैं नई नवली दुल्हन शादी के पश्चात सावन के महीने में अपनी सास से झूला डलवाने के लिए रेशम की डोर वह चंदन की पटरी बनवाने के लिए कहती है तो आगे से जवाब देती है कि यह है तब वह अपने पिता के घर से लेकर आए लेकिन जब बहू रहती है कि वह उसे बाप के घर(मायके) भिजवा दे तो सास कहती है कि अभी उनके खेत का काम पड़ा है। इन सभी भावनाओं का जिक्र निम्न लोकगीत में किया गया है :–

आया आया री सासड सामण मास,
डोर बटा दें पीली पाट की ।
आया तो बहुअड री आवण दें,
जाय बटाईयो अपणे बाप कै ।
आया आया री सासड सामण मास,
पटडी घड़ा दें चन्दन रूख़ की।
आया तो बहुअड री आवण दें,
जाय बटाईयो अपणे बाप कै ।
आया आया री सासड सामण मास,
हमनै खंदा दें री म्हारे बाप कै ।
इबै तो बहुवड खेती का काम ,
फेर कदी जाइयो री अपने बाप कै। [1]

"श्रावण के गीतों की शुरुआत इस ऋतु की शोभा के वर्णन से होती है। इन गीतों का फलक बड़ा व्यापक है। बहू की झूला झूलने की तीव्र इच्छा सास से झूले के लिए पीले रेशम की रस्सी बंटवाने चंदन की पटरी बनवाने का कातर अनुरोध, सास के द्वारा कृषि कार्यों की बहुलता का बखान, माता का लाड प्यार ,सास के उपालंभ एवं व्यंग्य ,पीहर और ससुराल की तुलना ,नायिका का मनाना और रूठना, पोषित पतिका का मेलै वेश में झूला झूलना, राधा का रूठना और कृष्ण का मनाना ,परदेश गए पति की अनुपस्थिति में वृक्ष की छाया ,गाय का दूध अच्छा न लगना ,प्रिय के वियोग में पगलाई हुई प्रेमिका, अबोध बाला का परदेसी के प्रति आकर्षण, मनिहार से अनूठी चूड़ियों की मांग आदि विषयों को केंद्र में रखकर रात्रि के समय महिला महफिलों में गाए जाने वाले सावनी गीत ग्रामीण परिवेश को संगीत में बना देते हैं"[2]

कार्तिक के गीत

महिलाएं कार्तिक मास में सूर्योदय से पूर्व हल्की–हल्की कोहरे , मीठी –मीठी ठंड, हल्की–हल्की धुंध से ढके सरोवर सरिता में डुबकी लगा– लगा कर आधि भौतिक ,आदि दैविक आदि अध्ययन एवं आध्यात्मिक तीनों टेपों को मिटाती हैं सेनानाथ जाति और स्नान करके वापस आती कुंवारी कन्याएं शुगर ग्रहणीय भोली कृषि एवं बैकुंठ की कामना करती पोपले मुख वाली वृद्धाएं लोकगीतो , प्रभातियों ,हरजसो के सुर ,ताल और लय से लोक को परिवेश को अलौकिक बना देती है ।कार्तिक स्नान की इच्छा को दर्शाता हुआ लोकगीत देखिए :

परस बैठ्या अपना बाबुल बुझया, कहो तो कातक नहा लूं हो राम ।
कातक नहाणा बेटी बड़ा ही दुहेला, लाइयो बाग बगीचे हो राम ।
दूध बिलोवती अपनी मायड़ बुज्झी, कहो तो कातक नहा लूं हो राम ।

1. **हरियाणा के लोकगीत, भाग 2, पृष्ठ संख्या 200, 2. निर्मला देवी, गांव –बादली, जिला –झज्जर।**

कातक नहाणा बेटी बड़ा ही दुहेला , सिंच्यो धर्म की क्यारी हो राम ।
धार काढ़ता अपणा बीरां ऐ बुझया, कहो तो कातक नहा लूं हो राम।
कातक नहाणा बेबे बड़ा ही दुहेला, ले लें न गोद भतीजा हो।
पीसणा पीसतीं अपनी बावज बुझयी,कहो तो कातक नहा लूं हो राम।
कातक नहाणा नणदल बड़ा ही दुहेला, काढो ना कसीदा हो राम ।। [1]

उपरोक्त गीत में यह दिखाया गया है कि एक कुंवारी कन्या के द्वारा कार्तिक स्नान करने के लिए अपने परिवार के सदस्यों से आज्ञा लेने का वर्णन किया गया है। सबसे पहले वह अपने पिता से पूछती है कि वह कार्तिक नहा ले तो उसका पिता उसे बाग लगाने का सुझाव देता है, उसकी मां उसे क्यारी में पानी देने को कहती है, उसका भाई भतीजे को खिलाने के लिए कहता है तथा भाभी भी उसे कार्तिक नहाने की बजाय कढ़ाई (कसीदाकारी) करने को कहती है।

"कार्तिक मास के गीतों में सर्वत्र गंगा स्नान का माहात्म्य दर्शनीय है, ग्रामीण कृषक श्रमिक वर्ग सीढ़ी की फसलों के गोरखधंधों से उन्मुक्त होकर इस धार्मिक, सामाजिक महोत्सव में सम्मिलित होने की पुण्य कामनाओं से मन ही मन रिझने लगता है। हरियाणा भर के ग्रामीण नर नारियों के हृदय में गंगा स्नान की साध को कम से कम जीवन में एक बार पूरा करने का उत्साह छाया रहता है। साधारण से साधारण महिलाएं भी अपने पति से गंगा स्नान का अनुरोध करती है। एक पत्नी द्वारा अपने पति से गंगा स्नान के लिए जाने की हठ का बड़े ही मनोरंजन पूर्ण ढंग से निम्न लोकगीत में दिखाया गया है:[1]

मैंने तो पिया गंगा न्हवादै , जा रहा सै संसार ।
तन्नै तो गोरी क्यूकर न्हवादू , हाथ्थल पड़ी सै भैंस ।
मान्नै तो पिया,जै मान्नै तू ,एक जतन पिया मैं बतलादयू ।
खूंटी पर मेरा दामण लटके ,चूंदड छापेदार ।
डब्बै म्हं मेरी नाथ धरी है,पहर काढियो धार।
बाहर तै एक आया मोडिया,बेब्बे भिक्शा घाल।

1. **हरियाणा संस्कृति एवं कला, पृष्ठ संख्या 96**

बैब्बे तो तेरी न्हाण गई सै,जीजा काढै धार ।
खूंटा पडागी,जेवडा तुडागी,भाजगी रै भैंस ।
डंडा लेकर पाछे होलिया, लेन गया था भैंस ।
गात्ती खुल गई, पल्ला उड़ गया, मूंछ फडाकै लैक
गलियां में या चर्चा होरी , देखी मुछल्ल नार।
कोठे चढ़ के रूकै मारे, हे री कोई मत घालो न्हाण ।[1]

कार्तिक स्नान में तुलसी की पूजा की जाती है, तुलसी ने अपनी भक्ति भावना के द्वारा रामकृष्ण के सदृश वर प्राप्त किया था । उसी वैष्णव भक्ति के आदर्श का निर्वाह अधतन तुलसी– पूजन के पवित्र अनुष्ठान के रूप में किया जाता है।

ऋतु गीतों में ग्रामीण जीवन और कृषि संस्कृति का चित्रण

हरियाणा एक कृषि प्रधान प्रदेश है। यहां का जीवन खेती किसानी पर आधारित है । ऋतु गीतों में खेती के प्रत्येक चरण जैसे– हल चलाना, बुवाई, सिंचाई ,फसल पकाना और फसलों की कटाई का सुंदर वर्णन मिलता है। किसान जब खेत में काम करते हैं, तो महिलाएं उनके साथ गीत गाकर उनका उत्साह

बढ़ाती है । वर्षा ऋतु के गीतों में वर्षा की प्रार्थना और फसल की समृद्धि का चित्रण होता है।

सामाजिक एवं धार्मिक महत्व

यह गीत केवल ऋतु परिवर्तन का वर्णन ही नहीं करते ,बल्कि यह सामाजिक और धार्मिक जीवन से भी जुड़े होते हैं । यह गीत केवल एक क्षेत्र विशेष तक सीमित नहीं है ,बल्कि यह विभिन्न जातियों , वर्गों और समुदायों को जोड़ते हैं । यह गीत सामूहिक रूप से गाए जाते हैं, जिससे सामाजिक बंधन मजबूत होते हैं। इन गीतों में परस्पर प्रेम ,भाईचारा और सांझी संस्कृति की झलक मिलती है ।

1. हरियाणा लोक साहित्य : सांस्कृतिक संदर्भ, पृष्ठ संख्या 68

निष्कर्ष

हरियाणा के ऋतु गीत ग्रामीण जीवन और लोक संस्कृति के अमूल्य धरोहर है यह गीत केवल ऋतु परिवर्तन का वर्णन ही नहीं करते बल्कि समाज की जीवन शैली कृषि संस्कृति धार्मिक विश्वास और नारी मां की भावनाओं की गहन अनुभूति है इन गीतों के माध्यम से हरियाणवी समाज की प्रकृति प्रेमी प्रवृत्ति, सामूहिकता और श्रमशीलता स्पष्ट झलकती है । आधुनिकता के इस इस दौर में इन गीतों का संरक्षण और प्रचार प्रसार आवश्यक है ,ताकि आने वाली पीढ़ियां अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ी रहे।

संदर्भ सूची

1. देशवाल ,डॉ. संतराम , हरियाणा संस्कृति एवं कला, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकूला ,2017।
2. शारदा , डॉ. साधुराम , हरियाणा के लोकगीत ,हरियाणा ग्रंथ अकादमी ,पंचकूला, 2011।
3. वशिष्ठ, डॉ. सावित्री ,हरियाणा की लोक संस्कृति, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकूला ,2016।
4. पूनिया, ओम प्रकाश, हरियाणवी लोकगीत: एक अध्ययन , हरियाणा साहित्य मंडल, करनाल, 2015।
5. मिश्र ,राम स्वरूप ,भारतीय लोकगीत और संस्कृति ,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ,2005।
6. मलिक, डॉ. भीम सिंह, हरियाणा लोक साहित्य : सांस्कृतिक संदर्भ, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़, 1990।
7. कादयान , ओम प्रकाश, हरियाणा के लोकगीत भाग 2, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकूला 2012।
8- हरियाणवी लोकगीत – म्हारा हरियाणा www-mharaharyana-com 2017।